A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

मैत्री समूह

Chirping Sparrow

Year - 12, Issue - 1

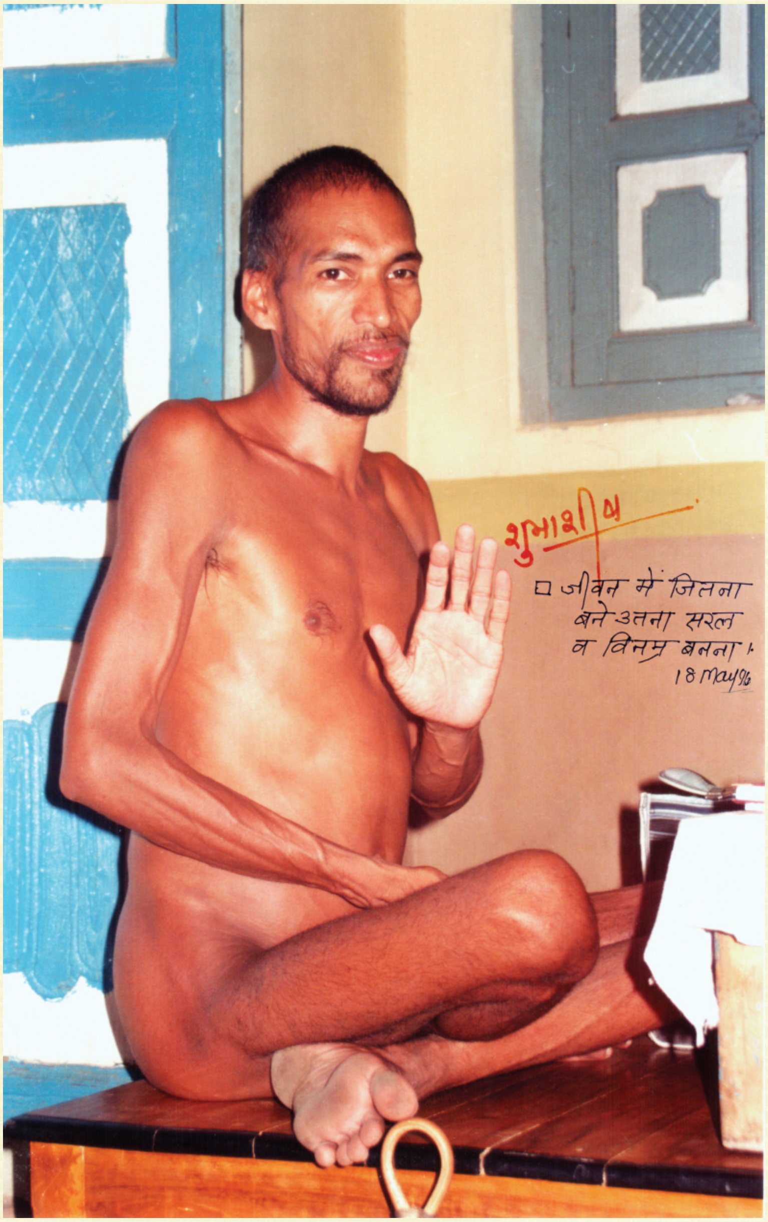

जो ज्योति-सा
मेरे हृदय में
रोशनी भरता रहा
वह देवता।
जो साँस बन
इस देह में
आता रहा
वह देवता।
मैं बँधा जिससे
मुझे जो मुक्ति का
सन्देश नव
देता रहा
वह देवता।
जो दूर रहकर भी
सदा से
साथ मेरे है
यही अहसास
देता रहा
वह देवता।

मैं जागता हूँ
या नहीं
यह देखने
द्वार पर मेरे
दस्तक सदा
देता रहा
वह देवता।
जो गति
मेरी नियति था
ठीक मुझ-सा ही
मुझे करता रहा,
वह देवता।

परिचय

मुनि क्षमा सागरजी महाराज वीतराग मुनि थे।आपनेयुवा अवस्था में सागर विश्वविद्यालय से भूगर्भ विज्ञान में एम. टेक. की उपाधि ग्रहण कीऔरमात्र 23 वर्ष की आयु में आपने आचार्य विद्यासागर जी के दर्शन के बाद वैराग्य पथ पर कदम रख दिया। आप एक समृद्ध परिवार के लाडले थे।जीवन में न कोई निराशा थी और न कोई हताशा,न कोई असफलता और न कोई विरक्ति प्रेरक घटना।स्वेक्षा और स्व प्रेरणा से आप आत्म कल्याण के लिए प्रेरित हुए।

मुनि क्षमा सागर जी जहाँ एक संवेदन शील कवि थे,वहीं दूसरी ओर महान साधक,सहित्यकार और विचारक भी।मुनिश्री का ज्ञान सदैव भक्तों को अपने संदेह, जिज्ञासा एवं शंकाओं के समाधान हेतु आकर्षित करता था।प्रश्नोत्तर के संवाद पूर्ण प्रहरमें जहाँ एक ओर किशोर होते थे तो वही दूसरी ओर प्रकांड विद्वान् भी।जीवन, जगत,आत्मा, परमात्मा और इनसे सम्बंधित सैकड़ों रहस्यों को लेकर उठ रही जिज्ञासा के उत्तर मुनि श्री के मुख से सुनना,अपने आप में एक अनुभव था। दया और करुणा की प्रतिमूर्ति मुनिश्री की वाणी का जादू सब

ओर छाया है। वे सरल और क्षमावान भी थे। बच्चों से विशेष स्नेह रखते थे, उन्हें धर्म से जोड़ने के लिए विज्ञान का सहारा लेते थे। युवा पीढ़ी से ही धर्म आगे बढ़ना है, ऐसा जानकर वे उनके लिए यंग जैना अवार्ड जैसे अनूठे कार्यक्रम के सूत्रधार बने।वे आडंबर और दिखावे से दूर रहकर, भावनाओं की श्रेष्ठताओं पर जोर देते थे। उनका मानना था कि इस बार न सही भगवान पर बेहतर इंसान जरुर बनना चाहिए।

मुनिश्री ने 35 वर्षों तक कठिन तपस्या की औरअकलुषित आचरण का पालन किया। आखिर के 10 वर्षों में कठिन रोग के कारण परीषह जय भी किया। असाध्य रोग में भी रंच मात्र भी अपनी साधना से नहीं डिगे। उन्होनें सिखाया कि कठिनता और प्रतिकूलता के समय में भी मुक्ति पथ पर ड़टे रहना चाहिए और समता भाव बनाये रखना चाहिए।

जन्म	:	20 सितम्बर 1957
जन्म नाम	:	वीरेंद्र कुमार सिंघई
जन्म सीन	:	सागर
माता	:	श्रीमती आशादेवी
पिता	:	श्री जीवन कुमार सिंघई
क्षुल्लक दीक्षा	:	10 जनवरी 1980
क्षुल्लक दीक्षा सीन	:	नैनागिरि
ऐलक दीक्षा	:	7 नवम्बर 1980
ऐलक दीक्षा सीन	:	मुक्तागिरि
मुनि दीक्षा	:	20 अगस्त 1982
मुनि दीक्षा सीन	:	नैनागिरि
दीक्षा गुरू	:	संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी
समाधि	:	13 मार्च 2015, चैत्र .ष्ण अष्टमी, प्रातः 5:13 बजे, स्थान : सागर (मध्य प्रदेश)

रचनायें

संस्मरण : 1. आत्मान्वेषी, 2. अमूर्त शिल्पी 3.कौशल्याके राम 4.यशोदा के कन्हैया

प्रवचन संग्रह : 1. कर्म कैसे करें, 2. जीवन के अनसुलझे प्रश्न, 3. गुरुवाणी(दशलक्षण पर्व), 4. गुरुवाणी (बारह भावना), 5. द्रव्य संग्रह, 6. सोलह कारण भावना

काव्य संग्रह : 1. पगडण्डी सूरज तक, 2. मुनि क्षमासागर की कवितायें, 3. अपना घर (भारतीय ज्ञानपीठ), 4. मुक्ति 5. मैं तुम्हारा हूँ, 6. चिड़िया घर लौट आई है

अनुवाद : एकीभाव स्तोत्र

संकलन : जैन पारिभाषिक शब्दकोष

प्रेरणा : 1. आस्था और अन्वेषण, 2. जीवन क्या है?, 3. ABC of Jainism , 4. My Musings(मेरी भावना), 5. जिन पूजा (Mini book of worship) 6. अनदेखा सच (Facts about Veg and Non-Veg Restaurants) 7. Self Enlightment (Translation of Chhahdhala), 8. पहला कदम, 9. दूसरा कदम, 10. तीसरा कदम(Jainism for Children), 11. सामाजिक एकता के चार सूत्र (Four maxims of social unity), 12. प्रवचन पर्व, 13. प्रवचन पारिजात

Chirping Sparrow

Year - 12, Issue - 1

Chirping Sparrow is published by
MAITREE JANKALYAN SAMITI
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com, samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com Mobile: 94254-24984
http://maitreesamooh.blogspot.com

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Jankalyan Samiti.

णमोकार मंत्र और टॉफी

मुनि श्री क्षमासागर जी : संस्मरण प्रसंग

यह बात तब की है, जब मुनि श्री क्षमासागर जी इंदौर में अपना चातुर्मास कर रहे थे, याने 1996 की। कंचनबाग के समवशरण परिसर में श्राविकाओं के लिए बने भवन की पहली मंजिल पर उनका अस्थायी पड़ाव था। वहीं एक बड़े कक्ष में दोपहर बाद उनसे मिलने और बात करने काफी लोग प्रायः पहुँचते थे। ऐसी ही एक शाम, कक्ष लगभग भरा हुआ था। विभिन्न चर्चाएँ हो रही थीं कि एक तेरह –चौदह वर्ष का किशोर कक्ष में प्रविष्ट हुआ। उसे इतने शिष्टाचार के लिए भी अवकाश नहीं था, कि वह दीवार के पास से जगह बनाते हुये मुनिश्री के निकट पहुँचे। वह सबके बीच से ही लोगों को ठेलता, धकियाता आगे बढ़ता हुआ मुनिश्री के सामने हाथ जोड़, नमोऽस्तु कहते हुए रूका। उसकी यह अभद्रता लोगों को समझ में नहीं आई, क्योंकि वह दिखने में सुंदर, स्वस्थ और अपने परिधान में किसी अच्छे घर का लग रहा था। मुनिश्री ने उसे आशीर्वाद दिया और वह किशोर एकदम बोला,'' मेरी एक जिज्ञासा है। '' मुनिश्री ने उससे जिज्ञासा प्रकट करने के लिए कहा। उसने कहा, '' मै यह जानना चाहता हूँ कि अगर मुँह में टॉफी हो, और मैं उसे खा रहा हूँ, ऐसे समय यदि णमोकारमंत्र पढ़ने की भावना हो जाए, तो मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे तत्काल टॉफी थूक देना चाहिए? यदि थूकने का स्थल न हो, तो क्या मुझे ऐसे स्थान पर जाना चाहिए, जहाँ मैं उसे मुँह से निकाल कर फेंक सकूं? क्या मुझे उसे खाते रहना चाहिए, कि जब वह समाप्त हो जाए तब मैं कुल्ला करने के बाद णमोकार मंत्र पढ़ूँ?''

किशोर का यह प्रश्न सुनकर सभी उपस्थित लोग अवाक् रह गये। सभी को लगा कि यह तो इस किशोर ने ऐसा प्रश्न उपस्थित कर दिया है, जिसका उत्तर सभी को चाहिये । किसी ने फुसफुसाया, 'टॉफी मुँह में रखे णमोकारमंत्र पढ़ना तो पाप होगा।' किसी ने कहा, 'बिना कुल्ला किए कैसे णमोकार मंत्र कोई पढ़ सकता है? किसी ने कहा, ' टॉफी– प्रेमी को णमोकार मंत्र की याद ही कैसे आएगी?' पर सब मुनिश्री की ओर देख रहे थे और सभी को उत्सुकता थी, यह जानने की, कि मुनिश्री क्या समाधान व्यक्त करते हैं। मुनिश्री ने उस किशोर से कहा कि देखो णमोकार मंत्र पढ़ने में कभी कोई रूकावट नहीं है। अगर टॉफी मुँह में है, और णमोकारमंत्र पढ़ने का मन हो रहा है, और अगर उस समय तुमने नहीं पढ़ा, और टॉफी खत्म करने की प्रतीक्षा की, और फिर कुल्ला करने के लिए पानी खोजने निकले, तब तक हो सकता है, कि णमोकारमंत्र पढ़ने का जो मन हो रहा है, वह बदल जाए। जो भावना णमोकार मंत्र पढ़ने की पैदा हुई है, वह इतने समय में समाप्त ही हो जाए।

इसलिए उचित यही होगा, कि टॉफी खाते हुये भी यदि णमोकार मंत्र पढ़ने का मन आए, तो जरूर पढ़ लेना चाहिए, पर एक बात जरूर ध्यान रखना, कि कहीं ऐसा न हो, कि तुम कभी णमोकारमंत्र पढ़ रहे हो, उस समय तुम्हारा मन टॉफी खाने का हो जाए। जीवन की किसी भी गतिविधि के बीच णमोकारमंत्र का स्वागत है, लेकिन णमोकारमंत्र से भरे हुए क्षणों में जीवन की ऐसी –वैसी गतिविधि के लिए अवसर नहीं होना चाहिये। ऐसा समाधान सुनकर सभी उपस्थितों को लगा, कि इस समाधान ने उनकी भी अनेक जिज्ञासाओं का शमन कर दिया है। यह भी लगा, कि चाहे उन्हें इस किशोर के आने और मुनिश्री तक जाने की शैली आपत्तिजनक लगी हो, पर उसका प्रश्न सटीक था, और अपने प्रश्न को पूछने का साहस प्रशंसनीय।

-प्रो. सरोज कुमार, इंदौर

नग्नता

विहार करते समय एक पुलिस
एस. पी. साथ में चल रहे थे ।
उन्होंनेमुनिश्री से पूछा कि नग्नता से क्या संदेश
मिलता है ?

मुनिश्रीः कम से कम में काम चलायें, जो बचे
वो दूसरों के काम आए, यह नग्नता का अर्थ–शास्त्र है ।

सामर्थ्य

झांसी में एक 85 वर्ष के बुजुर्ग ने इच्छा जाहिर
की, कि कंदमूल का त्याग करना है ।

मुनिश्रीः गाजर खाते हो ?
बुजुर्ग : हाँ आँख कमजोर है, इसलिये खाता हूं ।

मुनिश्रीः गाजर के अलावा बाकी कंदमूल
का त्याग कर दो।

मुनि श्री क्षमा सागर जी -अप्रतिम साधक और अद्वितीय कवि

मौत

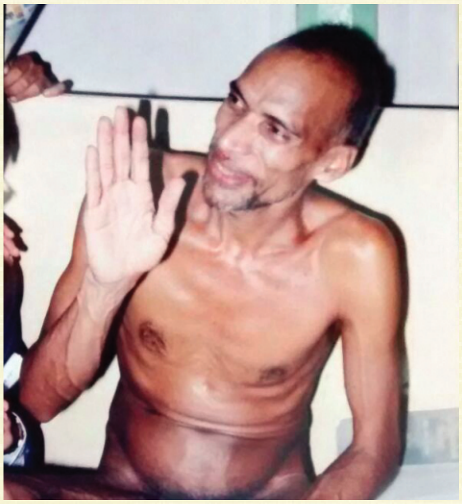

मुझे मौत में जीवन के फूल चुनना है।
अभी मुरझाना, टूटकर गिरना और अभी खिल जाना है।
कल यहाँ आया था, कौन कितना रहा इससे क्या ?
मुझे आज अभी लौट जाना है।
मेरे जाने के बाद लोग आएँ, अर्थी संभाले, कांधे बदलें,
इससे पहले मुझे खुद संभल जाना है।
मौत आए और जाने कब आए,
अभी तो मुझे संभल–संभलकर रोज–रोज जीना ओर रोज–रोज मरना है।

अकिंचन

देने के लिए
मेरे पास
क्या है
सिवाय इस अहसास के
कि कोई
खाली हाथ
लौट न जाए।

दाता

उसने कुछ नहीं जोड़ा,
लोग बताते हैं
पहनने का एक जोड़ा भी
उसके पास
नहीं मिला,
जिन्दगी भर अपना सब
देता रहा,
दे–देकर
सबको जोड़ता रहा।

नि:शेष

मुझे
कहना है अभी
वह शब्द
जिसे कहकर
नि:शब्द को जाऊँ
मुझे
देना है अभी
वह सब
जिसे देकर
नि:शेष हो जाऊँ
मुझे
रहना है अभी
इस तरह
कि मैं रहूँ
लेकिन
'मैं' रह न जाऊँ।

गन्तव्य

यात्रा पर निकला हूँ,
लोग बार–बार
पूछते हैं, कितना चलोगे?
कहाँ तक जाना है?
मैं मुस्कुराकर
आगे बढ़ जाता हूँ,
किससे कहूँ
कि कहीं तो नहीं जाना,
मुझे इस बार
अपने तक आना है।

मुनिक्षमासागर - जीवन दर्पण

- सुरेश जैन, आई.ए.एस.

1. पुरूषार्थ और निश्छल व्यक्तित्व के धनी क्षमा सागर जी ज्ञान, ध्यान और तप की जीवंत प्रतिमा थे। क्षमासागर जी श्रेष्ठ संत, मनीषी, कवि, चिंतक, प्रभावी प्रवचनकार, मौलिक साहित्य सृष्टा, वैज्ञानिक एवं अन्वेषक थे। उन्होनें अहिंसा, शाँति और नैतिकता के स्वरों को नई ऊर्जा एवं तेजस्विता प्रदान की है। शिशु वीरेन्द्र से लेकर क्षुल्लक/ऐलक/मुनि क्षमासागर तक की यात्रा अनुपम पुरूषार्थ एवं समग्र समर्पण की कहानी है। जैन अध्ययन के पारंगत विद्वान क्षमासागर को जैन धर्म और अध्यात्म प्रभावी विरासत के रूप में मिला । मध्य प्रदेश के सागर नगर में सिंघई जीवन कुमार एवं श्रीमती आशा देवी के घर आपने जन्म लिया। अत्यंत सुसंस्कृत वातावरण में जन्में और पले युवक वीरेन्द्र ने यौवन में प्रवेश करते ही आध्यात्मिक जगत के पुरोधा परम पूज्य विद्यासागर जी से नैनागिरि में 10 जनवरी 1980 को क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की और अपने आपको आचार्यश्री विद्यासागर जी को सौंप कर क्षमासागर बन गए। फिर उन्हें मुक्तागिरि में 7 नवंबर, 1980 को ऐलक दीक्षा और नैनागिरि क्षेत्र पर 20 अगस्त 1982 को मुनिपद की दीक्षा मिली।

2. मुनि क्षमासागर जी के प्रखर नेतृत्व में इक्कीसवीं सदी में मानवीय चेतना ने बहुत ऊँचाई प्राप्त की है। इक्कीसवीं सदी में विज्ञान और टेक्नालॉजी के साथ जी रहे आधुनिक व्यक्ति को अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए ऐसे संत ही सक्षम हैं। उन्होंने कंप्यूटर और इन्टरनेट के साथ जीने वाले मनुष्य को उसके चतुर्मुखी विकास के लिए सहज, सरल, प्रभावी और वैज्ञानिक ढंग से आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान की। नई पीढ़ी उनके व्यक्तित्व के मधुर आकर्षण तथा उनकी गुणवत्तापूर्ण, शक्तिशाली एवं वैज्ञानिक प्रवचन विधि से अत्यधिक प्रभावित एवं अभिभूत है। वे पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी के शैक्षिक अवदान, पूज्य विद्यासागर जी के अध्यात्मिक अवदान तथा पूज्य विद्यानन्द जी के सामाजिक अवदान के पावन संगम स्थल थे।

3. उनकी वीतरागता – सहजता, सरलता और सहिष्णुता से अलंकृत है। ध्यान, स्वाध्याय और सृजन उनके जीवन के अभिन्न अंग थे। संवर और निर्जरा से ओतप्रोत उनका व्यवहार श्रमण संस्कृति के आदर्श व्यक्तित्व का प्रतीक था।

4. क्षमासागर जी की प्रज्ञा जागृत थी और दृष्टि समन्वय शील। अपने सतत् अध्ययन, मनन एवं चिंतन के प्रभावी निष्कर्षों से क्षमासागर जी ने जैन धर्म की मौलिकता को सुरक्षित रखा और उसके परिष्कृत एवं वैज्ञानिक पक्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने जैन संस्कृति के विविध आयामों को विश्व के समक्ष प्रमाण व तर्क सहित रखा। उनके लेखन ने जो ऊँचाई पायी है वह एक मिसाल है। सरल, सहज और मन को छू जाने वाले उनकेप्रवचन, साहित्य और कवितायें अद्वितीय हैं।

5. वे जैन धर्म की प्रस्तुति आध्यात्मिक परिपक्वता, दूरदर्शिता, विनम्रता और सापेक्षता के साथ करते थे। आग्रह के अभाव में उनकी प्रस्तुति स्वाभाविक और विरोधाभास से पूर्णतः परे थी। उनकी प्रभावी, सापेक्ष, और विनम्र प्रस्तुति भिन्न वैचारिक पृष्ठभूमि के श्रोता को भी अपने विचार परिवर्तन हेतु सफलतापूर्वक प्रेरित करती है। उनके विचार, उनकी शिक्षाएं, उनका स्मरणहमारे विचारों को ऊर्जा एवं सौन्दर्य प्रदान करते हैं। उनसे हमें साधना पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा मिलती हैऔर हमारे व्यक्तित्व में प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

6. जैन धर्म उनके जीवन का मूलमंत्र था। इस मूल मंत्र का प्रतिपादन और अनुसरण करते हुए वे अपने गुरु द्वारा निर्दिष्ट पथ पर आगे बढ़ते रहे। उन्होंने धर्म को अपने व्यक्तित्व में धारण किया और अध्यात्म के क्षेत्र में उन्होंने अभूतपूर्व सफलता एवं शीर्षस्थान प्राप्त किया है।अकलुषित आचार, अप्रतिम करुणा और सवेंदनशीलता से परिपूर्ण उनके व्यक्तित्व के स्मरण मात्र से ही हमें अभ्युदय एवं निःश्रेयस की प्राप्ति होती है।मुनि क्षमासागर जी ने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि भगवान न सहीपरएक बेहतर इंसान बनने का प्रयास हम सभी को करना चाहिए। उनका स्वयं का जीवन संवेदना, करुणा, परोपकार की प्रतिमूर्त्ति था, जो सभी के लिए प्रेरणा स्रोतरहेगा।

भूल गया हूँ मैं मेरा तन
भूल गया मृत्यु को।
भूल गया है ये मेरा मन
कब जन्म मृत्यु हो।।
देह जलाई उनने ही जो
करते थे रखवाली
मेरा आतम आनंदित था
ज्यों बगिया फुलवारी ।।
मेरे मन के सागर में थी
शांत सरल हिल्लोरें
मुझको डिगा न पायी तन की
व्याधि जग किल्लोरे ।।
दूर देख कर मृत्यु को
पहले ही समझ गया था
तभी तो मैंने फिर पर से
समझौता नहीं किया था ।।
आज गया हूँ देह छोड़कर
मुझको बहुत खशी है
तुम मत रोना मेरे ऊपर
मेरी यही खुशी है ।।

-मुनि प्रणम्य सागर जी

अष्टमी की पावन भोर में दुखद समाचार मिला कि करुणा मूर्ति मुनि श्री क्षमा सागर जी केजीवन की साँझढल गई। मुनिश्री कल थे आज नही हैं। हम आज हैं कल नही रहेंगे यह एक ऐसा सच है जो हमें पर्यायों की नश्वरता से आत्मा की अमरता की और प्रेरित करता है । यह दुखद है कि मुनि श्री कि नश्वर देह काविसर्जन हो गया पर करुणा संवेदना के अमर रस में भीगी णमोकार की दिव्य ध्वनि एवम् पर हित सरिस धर्म, साधर्मी वात्सल्य, माँ बेटे के प्रेम में पगे,गुरु भक्ति की चासणी में डुबे दिव्य प्रवचनों के आकाश पर मुनि श्री सदा अजर अमर रहेंगे। मुनि श्री के गीत और कवितायें भी युगों युगों तक समाज को प्रेरणा का प्रकाश देती रहेंगी । मुनि श्री के चरणों में यही श्रद्धांजलि है –

दूर तुम कितने भी जाओ, पर जा नहीं पाओगे ।

झाँकेंगे जब जब हम अंदर मुनिवर को बैठा पाएंगे।

चले वियोग की कितनी भी आंधी या लील जाये ज्वाला तन को।

मनमंदिर में बैठे मुनिवर को कभी न विसरा पाएंगे।

- ब्र त्रिलोक जी

समता, ममता, नम्रता की प्रतिमूर्ति, चिंतन, मनन, मंथन के दिव्य कलश, आर्य परंपरा के आदर्श संवादक, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी के परम शिष्य ध्रुवतारे की भांति अति अल्प समय के लिए ही आपका अवतरण, लाखों करोड़ों के हृदय को झकझोर गया।

परम श्रद्धेय मुनिवर के युवाओं को संस्कारित, जागृत एवं प्रेरित करने वाले कार्य, धर्म और विज्ञान के सम्बन्ध में मौलिक शोधपरक एवं कालजयी .तियाँ अब हमारी अविस्मरणीय धरोहर हैं। अनेक कॉन्फ्रेंसेज में पूज्य मुनिवर का आशीर्वाद मुझे मिला, वस्तुतः वे युगपारखी एवं युगनिर्माता थे। वे हमें मिलेंगे उन दिव्य अक्षरों में, उस दिव्य वाणी में और हमें अनुभव होगा, वे कह रहे हैं, 'आगे आगे अपनी अर्थी के' मैं गा रहा हूँ सुनो तो सही!सच आपकी अमर स्वरांजलि में हम आपके दर्शन करते रहेंगे। आप सिद्धों के कुल में विराजमान हो गए हैं। हमारी आवाज, हमारी विनती, हमारी श्रद्धा वहींआपके चरणों में नमोस्तु करेगी ।

- डॉ नीलम जैन, पुने

मुनिश्री क्षमासागर जी महाराज जैन समाज के अनमोल रत्न थे। आचार्यश्री के संघ में उनका विशिष्ट स्थान था। उन्होंने जैन समाज की नई पीढी को मंदिरों और स्कूल कालेज पहुँचाने में महती भूमिका निभाई।

मुनिश्री क्षमासागर जी महाराज की समाधि बेहद पीडादायक समाचार है।बेशक उन्होंने कठिन तपस्या से अपनी आत्मा का कल्याण किया है, लेकिन उनके चले जाने से जैन धर्म व जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। मुनिश्री के चरणों में नमोस्तु। जिन भाई बहनों बच्चों ने अस्वस्थता के दौरान मुनिश्री की सेवा की उन्हें भी मैं प्रणाम करता हूँ।

– रवीन्द्र जैन पत्रकार, भोपाल

चहकती चिड़िया
उदास है
नदी भी
अनमनी सी
बह रही है
भरा–पूरा वृक्ष
भी खामोशी
ओढ़े हुए है
विशाल आकाश
भी नम है
उन्हें
अहसास है
कि उनका
"सच्चा अपना" अब नहीं है।

- अनुराग जैन, गंजबासौदा

आज का दिन अमर हो गया एक ऐसे व्यक्ति की पुण्यतिथि बनकर जिसने ना जाने कितने ही भटके हुओं को किनारा बताया, ना जाने कितने अंधों को उजाला दिखाया और ना जाने कितने सोये हुओं को नींद से जगाया। ये सत्य है कि अंत देह का होता है आत्मा का नहीं, परन्तु ये भी सत्य है कि उसी अनादिकालीन आत्मा की कोई पर्याय अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण विशिष्टता को प्राप्त हो जाती है। मुनि क्षमासागर जी की यह पर्याय भी ऐसी ही घटना का एक उदहारण है। मुनि श्री के गुणों के वर्णन करने का असफल प्रयास करना यहाँ मेरा उद्देश्य नहीं है, अपितु मेरा उद्देश्य तो यह सुनिश्चित करना है कि कैसे हम उनको जीवंत रख सकें?

क्षमासागर एक ऐसी विचारधारा है जो जीवन के शाश्वत मूल्यों को पहचानने की बात करती है। वह यह बतलाती है कि जीवन का कहीं कोई औचित्य है तो वह मात्र निस्वार्थ प्रेम में है। जिसकी ऐसी मान्यता है उसे ठगाए जाने में भी कोई बाधा नहीं, हमें तो यह ध्यान रखना है के हम किसी और को ना ठग लेवें। अपनी चेतना का विकास ही इस विचारधारा का सार है और क्षमासागर को जिन्दा रखने का एकमात्र उपाय भी। हमें चाहिए कि हम मुनिश्री को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। औरों को भी इन महान विचारों से अवगत कराएं। हम एक दूसरे का सहारा बनें इस विचारधारा को और गहराई तक समझने के लिए। आपसे अनुरोध करता हूँ कि जो कुछ आपने महाराज जी से सीखा, अपने जीवन में उतारा, उसको सबके बीच साझा करें। गर्व से कहें कि हम क्षमासागर के अनुयायी हैं, हम महावीर के अनुयायी हैं।

जय महावीर। जय क्षमासागर।

(Whatsapp Message)

विराट सोच ..गहन चिंतन.. अदभुत शब्द..चकित कर देने वाली कविताएँ..कलम के जादूगर..वाणी के महासंत.. सरस्वती पुत्र..युवा मनीषी.. प्रखर वक्ता...वात्सल्य हृदय.. चन्द्र सी शीतल मुस्कान...मौन प्रवचन के धनी...कितनी उपमाओं से सुशोभित करें इस महान संत को जो जाते जाते अपनी अमिट पहचान ही नहीं बल्कि वो शब्द छोड़ कर गए जिन्हें पढ़ कर युवा चेतना और नव निहाल अपने जीवन को, समाज को, परिवार को, धर्म को औरअपने राष्ट्र को गौरवान्वित करते रहेंगे। ऐसे युवा संत को ऐसे श्रमणमुनि को, प्रज्ञावान को कोटि कोटि नमन।

विषयों की आशा नहीं जिनके साम्य भाव धन रखते हैं, ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुःख समूह को हरते हैं।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे, उन्हीं जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे ।

मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे, दीन दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत बहे ।

I pay tribute - "vinayanjali" to this great saint through my thoughts and my deeds.

मुनिश्री को कोटि–कोटि नमोस्तु

- Ruchi Jain, California

(Whatsapp message)

"What he was and who he was?" Only the ones who got the chance to come into the contact of that great soul can understand this. My heart is not ready to accept. It just wants to believe that he is still here हमारे साथ, हमारे पास और हमेशा रहेंगे। हमें inspire करते रहेंगे। हमसे प्यार करते रहेंगे, हमें हँसाते रहेंगे, और हमेशा की तरह हमें जीना सिखाते रहेंगे। ...Thank you महाराजजी ।

- Shubhita Jain, Jaipur

(Whatsapp message)

योग, तपस्या, महासाधना, हिमगिरि सा आधार
एक क्षमा के आगे देखो झुक जाता संसार
कोमल हृदय क्षमासागर के आगे नही विराम
गुरुवर बारम्बार प्रणाम, मुनिवर शत् शत् बार प्रणाम

We all are deeply grieved and are going through the most difficult time. We have lost someone so special and close to each one of us. Each one of us has very special moments spent with Munishree which we can never forget. Few lines written by Munishree -

"अनुभूति बड़ी चीज है । जीवन की श्रेष्ठ अनुभूतियाँ सँभाल कर रखना, जीवन भर यही काम आएँगी"

-Pratiksha Jain, Bangolre

(Whatsapp message)

सागर का मोती सागर मे समा गया
सीप का मोती बन क्षेत्र विदेहचला गया
जन्म लेकर नर काया में कमाल कर गया
सागर का लाल जग में नाम कर गया
वह माँ का लाडला जग की आँखो का तारा बन गया
कर्म सिद्धांत की व्याख्या हमें दे गया
जीवन नश्वर हैं पर संकल्प अमर कर गया

कंठ में उत्साह था तो
बोल कर सब को बताया।
थक गया जो कंठ तो,
फिर नेत्रों ने बीड़ा उठाया।।
वो समंदर है अतुल बल
भावना का अथक संबल।
तब बोल कर वो बाँटता था
नजरों से है वो अब लुटाता।।
शब्द शायद सोचते हों
फिर उन्हें चूमे अधर।
अंदर घुमड़ कर बादलों से
जाते होंगे अब वो सिमट।।
वो नेह का दीपक सलोना
उनको भी ढांढस बाँधता है।
उम्मीद से खुद को संजो कर
जग को वो हिम्मत बाँटता है।.
मैं जब मिला और पूछा उनसे
क्या है मुझे अब तेरी आज्ञा।
कुछ भी नहीं में सर हिलाकर
आशीष को बस कर उठाता।।
हे महासिंधु ! तेरी विनय में
गीत लिख पाता नहीं हूँ।
तुम मौन रहकर बोलते हो
मैं बोलकर कह पाता नहीं हूँ।।

- Rakesh Jain, Shahpur

चले गए वो संत क्षमा, जीवन में क्षमा को धारा।
अंत समय में सिद्ध प्रभु का मुख से नाम पुकारा।

सागर की माटी में जन्मा रत्न क्षमा सा प्यारा।
विलीन हो गया उस माटी में संत समाज का तारा।

विद्या गुरू का शिष्य अनोखा सम्यक् तप का धारी था।
परम प्रभावक शिष्य रहा गुरूवर का आज्ञाकारी था।

जैन जगत ने जो खोया है वो मोती नहीं पा सकते हैं।
संतों में भी संत क्षमा सम संत नहीं ला सकते हैं।

गुरूवर मेरा पाप उदय था अंतिम दर्श न कर पाया।
तेरी हर तस्वीर के आगे परोक्ष नमोस्तु कर पाया।

अल्प समय गुरू वत्सल जीवन भर भूल न पायेंगे।
जब भी गुरु की चर्चा होगी परोक्ष में शीश झुकायेंगे।

नमन नमन नमन नमन.

-Ajay Kumar Jain, Simariya

शीशा देने वाला

जब भी मैं
रोया करता
माँ कहती –
यह लो शीशा,
देखों इसमें
कैसी तो लगती है
रोनी सूरत अपनी
अनदेखे ही शीशा
मैं सोच–सोचकर
अपनी रोनी सूरत
हँसने लगता।

एक बार रोई थी माँ भी
नानी के मरने पर
फिर मरते दम तक
माँ को मैंने खुलकर हँसते
कभी नहीं देखा।
माँ के जीवन में शायद
शीशा देने वाला
अब काई नहीं था।
सबके जीवन में ऐसे ही
खो जाता होगा
कोई शीशा देने वाला।

और और अपना

जिसे पाकर लगे
कि अपने को पा लिया,
समझना वह अपना है।
और जिसे पाकर
लगे कि अपने को
खो दिया,
समझना वह और भी
अपना है।

हजारों के ''अपने'', और शीशा दिखाने वाले मुनिश्री क्षमा सागर जी को शत-शत वंदन

BOOK-POST

Chirping Sparrow

Year - 12, Issue - 1

A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

From
MAITREE SAMOOH
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com,
samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com
http://maitreesamooh.blogspot.com
Mob.: 94254-24984

To, ______________________

____

____